



डीआरडीओ

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

समाचार

भारत द्वारा निर्भय सब-सोनिक क्रूज प्रक्षेपास्त्र का सफल उड़ान परीक्षण



निर्भय प्रक्षेपास्त्र का सफल परीक्षण।

४०

इस अंक में

४२

- इंपीरियल ईगल और रुस्तम का सफलतापूर्वक परीक्षण
- अग्नि 1 का सफल प्रक्षेपण
- डी आर डी ओ द्वारा जम्मू कश्मीर में राहत कार्यों में मदद
- समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर
- स्थापना दिवस समारोह
- डाटा सेन्टर का उद्घाटन
- मानव संसाधन विकास गतिविधियां
- कचरे का उपयोगी उत्पादों में परिवर्तन करें: डी आर डी ओ प्रमुख
- कार्मिक समाचार
- पुरस्कार
- खेलकूद गतिविधियां
- डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

भारत के पहले स्वदेश निर्मित और विकसित लम्बी दूरी के सब-सोनिक क्रूज प्रक्षेपास्त्र 'निर्भय' का 17 अक्टूबर 2014 को एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर, उड़ीसा से सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया। यह पूरे मिशन में ऊपर उठने से नीचे उतरने तक सम्पूर्ण मिशन अपने समस्त लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए एक आदर्श उड़ान थी।

माननीय रक्षा मंत्री, श्री अरुण जेटली ने डॉ अविनाश चन्दर, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव तथा रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के निदेशक तथा निर्भय की टीम को सफल परीक्षण के लिए बधाई दी।

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद द्वारा विकसित एक ठोस राकेट मोटर बूस्टर द्वारा संचालित निर्भय को वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर द्वारा विकसित एक विशेष रूप से डिजाइन मोबाइल लांचर से शानदार

ढंग से दूर ले जाया गया। नामित ऊँचाई और गति हासिल करने के बाद इसका टर्बोफैन इंजन स्वचालित रूप से आगे प्रणोदन पर चालू हो गया और उड़ान को संचालित करने वाले ऑनबोर्ड कम्प्यूटर द्वारा उत्पन्न आदेशों से पंखों को खोला गया। अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद द्वारा स्वदेश में विकसित अति उन्नत जड़त्वीय नौपरिवहन प्रणाली से निर्देशित निर्भय ने 1 घंटे 10 मिनट की अवधि तक अपनी उड़ान को जारी रखा। डी आर डी ओ के वैज्ञानिकों की एक टीम भूमि आधारित रडार की मदद से प्रक्षेपास्त्र के पूरे पथ का पता लगाती रही। स्वदेशी टेलीमेट्री स्टेशनों द्वारा प्रक्षेपास्त्र के मापदण्डों पर नजर रखी गयी। भारतीय वायु सेना के विमानों ने भी निर्भय के प्रदर्शन पर अपनी पैनी नजर रखी।

डॉ अविनाश चन्दर ने प्रक्षेपण के बाद कहा, “प्रक्षेपास्त्र ने अपने पूरे रास्ते भर 10 मीटर की दूरी बेहतर सटीकता के साथ बनाये रखी।” डॉ चन्दर ने स्पष्ट किया, “निर्भय क्रूज प्रक्षेपास्त्र का सफल स्वदेशी विकास हमारे सशस्त्र बलों की युद्ध लड़ाकू क्षमताओं में एक महत्वपूर्ण अंतर को भरेगा।”

दुश्मन के इलाके में 1000 किमी वर्ग क्षेत्र तक हवाई हमला करने की क्षमता वाला क्रूज प्रक्षेपास्त्र को डी आर डी ओ की वैमानिकी प्रयोगशाला, वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूरु द्वारा अभिकल्पित एवं विकसित किया गया है। यह प्रक्षेपास्त्र हाल के घटनाक्रम में देश के सशस्त्र बलों के लिए हथियार प्लेटफार्मों और उपकरणों के उत्पादन करने के लिए अग्रणी डिजाइन और विकास कार्यों में भारतीय तकनीकी क्षमताओं में एक अभूतपूर्व कदम है।

यह निर्भय क्रूज प्रक्षेपास्त्र का दूसरा प्रक्षेपण था। पिछले साल 12 मार्च 2013 को पहले प्रक्षेपण में मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने में आंशिक सफलता मिली थी। पहली उड़ान को एक घटक की खराबी के कारण अपने पथ से विचलन होने के बाद समाप्त कर दिया गया था।

उत्कृष्ट वैज्ञानिक और वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूरु के निदेशक तथा निर्भय मिशन के



निर्भय प्रक्षेपास्त्र का सफल परीक्षण।

निदेशक, श्री पी श्रीकुमार ने प्रक्षेपण के संचालन का नेतृत्व किया। प्रक्षेपण तैयारियों की योजना और देखरेख श्री बसंत शास्त्री, निर्भय परियोजना निदेशक द्वारा की गयी थी। प्रक्षेपण के समय डॉ के तमिलमणी, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक, वैमानिकी प्रणाली; डॉ वी जी शेखरन, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक, प्रक्षेपास्त्र तथा सामरिक प्रणालियां; वाइस एडमिरल दिनेश प्रभाकर (सेवानिवृत्त), अति विशिष्ट सेवा मेडल, नौसेना सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल, महानिदेशक, उन्नत प्रौद्योगिकी वाहन कार्यक्रम; डॉ जी सतीश रेड्डी, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई) ; डॉ टेसी थॉमस, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद; श्री एम वी के वी प्रसाद, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, आई टी आर, तथा डी आर डी ओ के वरिष्ठ वैज्ञानिक उपस्थित थे।

इंपीरियल ईगल और रुस्तम 1 का सफलतापूर्वक परीक्षण

दिनांक 04-05 सितम्बर 2014 को देवलाली में श्री बी पी शशीधर, वैज्ञानिक जी के नेतृत्व में वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूरु और राष्ट्रीय वैमानिकी प्रयोगशाला (एन ए एल), बेंगलूरु की संयुक्त टीम द्वारा 2 किलो वर्ग के छोटे मानवरहित हवाई वाहन (एम यू ए वी), इंपीरियल ईगल और रुस्तम की उड़ान परीक्षणों का आयोजन किया गया। परीक्षणों का उद्देश्य

भारतीय सेना के वरिष्ठ कमान के समक्ष छोटे मानव रहित हवाई वाहन (एम यू ए वी) की क्षमताओं का प्रदर्शन करना था।

छोटे मानव रहित हवाई वाहन (एम यू ए वी) ने कठोर मौसम परिस्थितियों में पूर्ण स्वायत्त नियंत्रण के तहत उड़ान भरने की अपनी मजबूत क्षमताओं का प्रदर्शन



छोटा मानवरहित हवाई वाहन इंपीरियल ईगल।

भरकर और हवाई क्षेत्र से लगभग 7 किलोमीटर की दूरी को कवर करके कम बादलों वाली परिस्थिति में रुचिकर स्थानों की फोटो खेंचकर अपनी परिचालन क्षमता का प्रदर्शन किया। इंपीरियल ईगल मिशन को पूरा करने के बाद सही तरह से उतर आया।

एक और मील के पत्थर के रूप में में वैमानिकी



मध्यम ऊँचाई वाली लम्बी दूरी मानवरहित हवाई वाहन रुस्तम 1।

करते हुए अलग-अलग मौसम में सफलतापूर्वक उड़ान भरी। इसने 300 मीटर से भी अधिक की ऊँचाई पर उड़ान

अवसर पर उपस्थित थे और उन्होंने टीम रुस्तम को इसकी सफलता के लिए बधाई भी दी।

विकास स्थापना (ए डी ई) द्वारा मानव रहित हवाई वाहन (यू ए वी) रुस्तम 1 की मध्यम ऊँचाई वाली लम्बी दूरी (एम ए एल ई) क्षमता वाली उड़ान का 20 सितम्बर 2014 को कोलार हवाई अड्डे पर आयोजन किया। रुस्तम 1 ने लगभग 7 घंटों तक सफलतापूर्वक उड़ान भरी। डॉ के तमिलमणी, विशिष्ट वैज्ञानिक और महानिदेशक (एयरो), डी आर डी ओ ; उड़ान के

अग्नि 1 का सफल प्रक्षेपण

11 सितम्बर 2014 को व्हीलर द्वीप, उड़ीसा तट से सामरिक बल कमान (एस एफ सी) ने कम दूरी की मिसाइल, अग्नि-1 का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया। एस एफ सी द्वारा आवर्ती प्रशिक्षण के रूप में आगे परिचालन तत्परता मजबूत करने के लिए प्रक्षेपण किया गया था। प्रक्षेपास्त्र को एक ठोस राकेट प्रणोदक प्रणाली द्वारा आगे बढ़ाया जाता है और इसमें 700 किमी से अधिक दूरी तक की क्षमता है। परीक्षण के प्रक्षेप पथ को प्रक्षेपास्त्र की शुरुआत से लक्षित क्षेत्र को सटीकता के साथ हिट करने तक परिष्कृत रडार, टेलीमेट्री अवलोकन स्टेशनों, इलैक्ट्रो ऑप्टिक उपकरणों की मदद से निगरानी में रखा जाता है।



अग्नि 1 का सफल प्रक्षेपण।

डी आर डी ओ द्वारा जम्मू कश्मीर में राहत कार्यों में मदद

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

जम्मू कश्मीर के बाढ़ पीड़ितों को राहत प्रदान करने के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी आर डी ओ) का एक दल दवाओं और अन्य चिकित्सा सहायता एवं खाने के लिए तैयार (आर टी ई) डिब्बा बंद खाद्य पदार्थों के साथ 9 सितम्बर 2014 को श्रीनगर गया। सशस्त्र बलों के लिए खाने को तैयार (Ready-to-eat) खाद्य प्रौद्योगिकियां तैयार करने वाली डी आर डी ओ की अग्रणी रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एफ आर एल), मैसूर में लगभग 9 टन खाने को तैयार (Ready-to-eat) स्थानीय स्वाद वाले डिब्बा बंद खाद्य पदार्थों को युद्ध स्तर पर तैयार और पैक किया गया। प्रभावित लोगों के लिए खाद्य पैकेट वितरित किये गये। स्वच्छता से पैक किये हुए लम्बे समय तक चलने वाले खाने को तैयार (RTE) खाद्य पदार्थों में चपाती, शाकाहारी पुलाव, टमाटर चावल, नींबू चावल, जीरा चावल, बंगाली चना, दाल फ्राई, खिचड़ी और सूजी हल्वा शामिल था।

डी आर डी ओ द्वारा विकसित एक मोबाइल उपग्रह सेवा टर्मिनल (SATCOM) भी श्रीनगर ले जाया



जम्मू कश्मीर के बाढ़ पीड़ितों को खाने के लिए तैयार भोजन को भेजते हुए डी आर डी ओ कर्मी।

गया और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल एवं गृह मंत्रालय, नई दिल्ली के बीच संचार सेवा को मोबाइल फोन तथा दोनों तरफ से प्रत्यक्ष-डायलिंग सुविधा के माध्यम से चालू कर दिया गया।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, डॉ अविनाश चन्दर ने बाढ़ पीड़ित लोगों के कष्टों को कम करने में हर संभव तकनीकी सहायता के लिए डी आर डी ओ की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर



डॉ. भूटियानी तथा श्री राजू, समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जी एस आई), केन्द्रीय मुख्यालय, कोलकाता में 5 सितम्बर 2014 को भारत में पूर्व चेतावनी प्रणाली के लिए उपकरणों के विकास एवं भूस्खलन की निगरानी के संबंध में रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला (डी टी आर एल), दिल्ली और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जी एस आई) खान मंत्रालय, भारत सरकार के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गये। श्री एम राजू, उपमहानिदेशक, जी एस आई तथा डॉ एम आर भूटियानी, निदेशक, डी टी आर एल ने श्री ईश्वर, अपर महानिदेशक, जी एस आई तथा श्री सुनील धर, परियोजना निदेशक, भूस्खलन चेतावनी भू-भाग बुद्धिमता, डी टी आर एल एवं दोनों संगठनों के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये।

समझौता ज्ञापन का उद्देश्य वर्षा/जमीन संतृप्ति और विस्थापन के बीच उपकरणों एवं अनुभवजन्य संबंधों के आधार पर भूस्खलन की एक पूर्व चेतावनी प्रणाली के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करने के उद्देश्यों को प्राप्त करना है। यह परियोजना साधन आधारित भूस्खलन निगरानी के लिए मानक संचालन प्रक्रिया के विकास को आगे बढ़ायेगी। यह समझौता डी टी आर एल की साधन आधारित निगरानी में विशेषज्ञता होने और जी एस आई का भूमि आधारित भूगर्भीय/भू-तकनीकी भूस्खलन अध्ययन में व्यापक विशेषज्ञता और अनुभव के जैसी दोनों

जानकारियों के संयोजन के साथ भारत में वास्तविक समय पर भू-स्खलन चेतावनी प्रणाली विकसित करने के लिए एक अच्छा मंच स्थापित करेगा।

हिमालय में भविष्य की संभावनाओं, भूस्खलन इंस्ट्रुमेंटेशन और निगरानी की स्थिति के बारे में तकनीकी विचार विमर्श के साथ आधे दिन की बैठक ओल्डम हॉल, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, कोलकाता में आयोजित की गयी थी। श्री एश्वर्य ने बैठक की अध्यक्षता की। श्री एम राजू ने तकनीकी चर्चा की शुरुआत की तथा संयुक्त प्रयास की जरूरत और उद्देश्य के बारे में बतलाया।

डॉ एम आर भूटियानी ने मिशन को क्रियान्वित करने में डी टी आर एल की क्षमताओं और प्रतिबद्धताओं को प्रस्तुत किया। श्री सुनील धर ने जिला चमौली, उत्तराखण्ड में तांगनी भूस्खलन के साधन आधारित निगरानी का ब्यौरा प्रस्तुत किया। इस भूस्खलन पर पिछले दो सालों से एक वास्तविक समय मोड में डी टी आर एल द्वारा नजर रखी जा रही है। श्री धर ने उपकरण के प्रकार, इसकी तैनाती और अब तक उत्पन्न डाटा के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। श्री ईश्वर, डॉ पी बी सलोरकर, उपमहानिदेशक, पी एस एस-पी एंड एम, डॉ वी के शर्मा, निदेशक, भूस्खलन प्रभाग, एस यू, उत्तराखण्ड, डॉ सैबाल घोष, भू-वैज्ञानिक अधीक्षक, जी एच आर एम सेल, सी एच क्यू, कोलकाता ने अपने विचार व्यक्त किये।

स्थापना दिवस समारोह

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे ने 01 सितम्बर 2014 को अपना 56वां स्थापना दिवस आमोद-प्रमोद और उत्साह के साथ मनाया। श्री ए एम दातार, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (ए सी ई), डी आर डी ओ और एयर मार्शल (सेवानिवृत्त), बी एन गोखले, परम विशिष्ट सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट मेडल इस अवसर पर विशेष रूप में आमंत्रित थे। गणमान्य



ए आर डी ई, स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर गुब्बारे उड़ाए गए।

व्यक्तियों द्वारा पर्यावरण की प्रतिबद्धता के रूप में वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर कर्मचारियों ने विभिन्न खेलों में उत्साह के साथ भाग लिया। उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा ए आर डी ई के निदेशक, डॉ के एम राजन ने प्रतिष्ठान की तकनीकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और प्रतिष्ठान के कर्तव्यों के घोषणा-पत्र को पूरा करने में खुद को पुनर्समर्पित करने के लिए कर्मचारियों का आवाह किया। कर्मचारियों को प्रयोगशाला स्तर के डी आर डी ओ पुरस्कार, आयुध पुरस्कार, नकद पुरस्कार, प्रशस्ति प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। डी आर डी ओ में सेवा के 25 साल पूरा करने वाले कर्मचारियों को स्मृति चिह्न भेंट किये गये।

डाटा सेन्टर का उद्घाटन



डॉ के तमिलमणी, डाटा सेन्टर का उद्घाटन करते हुए।

डाटा सुरक्षा, ई-शासन और साइबर सुरक्षा की जरूरत पर बल दिया और इस दिशा में ए डी ई द्वारा किये गये प्रयासों की सराहना की।

डॉ के तमिलमणी, महानिदेशक (एयरो), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने 10 सितम्बर 2014 को डाटा सेन्टर का उद्घाटन किया और 10 सितम्बर 2014 को वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरु में अगली पीढ़ी के लिए डॉट नेट प्रौद्योगिकी पर इंटरनेट पोर्टल का उद्घाटन किया। उन्होंने इन सुविधाओं और इनके संचालन के बारे में जानकारी दी।

श्री आर चन्द्रशेखरन, वैज्ञानिक एफ ने वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई) में डाटा और आवाज संचार बुनियादी सुविधाओं के बारे में एक प्रस्तुति पेश की। डॉ तमिलमणी ने

मानव संसाधन विकास गतिविधियां

सम्मेलन / सेमिनार / विचार-गोष्ठी / प्रशिक्षण पाठ्यक्रम / बैठक

उड़ान यांत्रिकी, मार्गदर्शन, नौपरिवहन और नियंत्रण पर निरंतर शिक्षा कार्यक्रम



श्री पी एस कृष्णन, उद्घाटन उद्बोधन देते हुए।

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरु ने 8-12 सितम्बर 2014 के दौरान उड़ान यांत्रिकी, मार्गदर्शन, नौपरिवहन और नियंत्रण पर निरंतर शिक्षा कार्यक्रम पाठ्यक्रम का आयोजन किया। उत्कृष्ट वैज्ञानिक और वैमानिकी विकास स्थापना के पूर्व निदेशक श्री पी एस कृष्णन ने उद्घाटन भाषण दिया। इस बारे में विभिन्न विषयों के सभी 15 व्याख्यानों को ए डी ई, एन ए एल, वैमानिकी विकास एजेंसी और अनुसंधान केन्द्र इमारत के विशेषज्ञों द्वारा पाठ्यक्रम के दौरान शामिल किया गया। वैमानिकी विकास स्थापना में विभिन्न सुविधाओं के साथ प्रतिभागियों को अवगत कराने के लिए प्रयोगशाला निरीक्षण की व्यवस्था की गयी। विभिन्न डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से 35 प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया।

छठा के यू लिमये स्मृति व्याख्यान

स्वर्गीय श्री यू लिमये पूर्व निदेशक, सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केंद्र (एम टी आर डी सी), बैंगलूरु, और मुख्य नियंत्रक, अनुसंधान एवं विकास (ई सी एस), डी आर डी ओ की स्मृति में एम टी आर डी सी, द्वारा 02 सितम्बर 2014 को छठे के यू लिमये स्मृति

व्याख्यान आयोजित किया गया। उत्कृष्ट वैज्ञानिक और एम टी आर डी सी के निदेशक डॉ ललित कुमार ने व्याख्यान के महत्त्व के बारे में बताया। प्रोफेसर बी एन सुरेश, डॉ विक्रम साराभाई प्रतिष्ठित पीठ और पूर्व निदेशक, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, तिरुवनंतपुरम ने राष्ट्रीय विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के सामाजिक विकास में मदद करने वाले विकास पहलुओं को शामिल करते हुए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों पर व्याख्यान दिया। एक अनूठे अंतरिक्ष प्रक्षेपण मिशन का वीडियो भी उनके व्याख्यान का हिस्सा था। इलैक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान एवं विकास स्थापना (एल आर डी ई), बैंगलूरु के पूर्व निदेशक, डॉ एन पी रामसुभा राव ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री एन सीताराम, पूर्व मुख्य नियंत्रक (अनुसंधान एवं विकास) और श्रीमती के यू लिमये इस अवसर पर उपस्थित थे।

साइबर सुरक्षा पहलुओं के कार्यान्वयन पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम



श्री मालेश्वर, पाठ्यक्रम का उद्घाटन करते हुए।

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम द्वारा 25-28 अगस्त 2014 के दौरान साइबर सुरक्षा पहलुओं के कार्यान्वयन पर सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। एन एस टी एल, विशाखापत्तनम के निदेशक, श्री सी डी मालेश्वर ने पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। प्रोफेसर पी एस अवधनी, प्राचार्य, अभियांत्रिकी महाविद्यालय, आंध्र प्रदेश, ने सूचना युग में साइबर सुरक्षा की भूमिका पर मुख्य भाषण दिया। सी डैक, हैदराबाद, रक्षा उन्नत प्रौद्योगिकी संस्थान (डी आई ए टी), पुणे, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम, जे एन टी यू काकीनाड़ा, जी आई टी ए एम विश्वविद्यालय,

विशाखापट्टनम और मैसर्स ईगल क्लाऑ प्राइवेट लिमिटेड हैदराबाद जैसे विभिन्न संगठन/संस्थानों के विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिये। पाठ्यक्रम के दौरान साइबर सुरक्षा से संबंधित निम्नलिखित विषयों को शामिल किया गया:

साइबर सुरक्षा का परिचय, नेटवर्क सुरक्षा, कमजोरियाँ, साइबर खतरे, नीति संबंधी हैकिंग का परिचय, सामाजिक इंजीनियरिंग हमलों से रक्षा करना आदि। श्री एस नागमल्लेश्वर राव, वैज्ञानिक एफ, पाठ्यक्रम निदेशक थे।

डिहार की तकनीकी संगोष्ठी-2014 में सहभागिता



उत्तरी तकनीकी संगोष्ठी-2014 में डिहार की प्रौद्योगिकियाँ एवं उत्पाद।

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह ने 4-5 सितम्बर 2014 के दौरान ऊधमपुर में उत्तरी कमान मुख्यालय के तत्वावधान में 3 एडवांस बेस वर्कशाप द्वारा आयोजित उत्तरी तकनीकी संगोष्ठी-2014 में भाग लिया।

लेफ्टिनेंट जनरल डी एस हुड्डा, अति विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल, जी ओ सी उत्तरी कमान ने डिहार, लेह स्टाल का दौरा किया और हर्बल फार्मूलों, नॉर्मोबारिक हैचिंग प्रौद्योगिकी के नवाचारों और डिहार द्वारा विकसित बहु-स्तरीय सेमी स्वचलित थर्मली नियंत्रित मुर्गी पालन प्रणाली की सराहना की। जनरल आफिसर ने भी अवकाश लेने वाले सेना कर्मियों के प्रशिक्षण और उनके पुनर्वास के लिए डिहार की सराहना की।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह

14 सितम्बर, 1949 को भारत की संविधान सभा में अधिकारिक भाषा के रूप में हिन्दी को अपनाया गया है। तब से 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। सरकारी कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने को प्रेरित करने के लिए और दिन प्रति दिन सरकारी कामकाजों को भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए एक माहौल बनाने के परिदृश्य के साथ, संगठन हर साल सितम्बर में हिन्दी दिवस मनाते हैं। देश के विभिन्न भागों में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की विभिन्न प्रयोगशालाओं/प्रतिष्ठानों ने भी अपने अपने स्थानों पर हिन्दी पखवाड़ा/दिवस मनाया। कविता पाठ, मसौदा एवं टिप्पणी लेखन, टाइपिंग, अनुवाद, आशुलिपि, कहानी कहो, प्रश्नोत्तरी, निबन्ध लेखन आदि जैसी प्रतियोगिताएँ पखवाड़ा के दौरान आयोजित की गयीं। कुछ मुख्य आकर्षण इस प्रकार हैं-

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरु

दिनांक 01 सितम्बर 2014 के दौरान वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरु ने हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया। कम्प्यूटर और उसका प्रयोग करते हुए हिन्दी टंकण पर एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ पखवाड़े को शुरू किया गया। कार्यक्रम के दौरान 14 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। 15 सितम्बर 2014 को हिन्दी दिवस मनाया गया। श्री पी श्रीकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक और निदेशक, ए डी ई ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री, रक्षा मंत्री और रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार द्वारा हिन्दी दिवस के लिए संदेश पढ़े गये और श्री श्रीकुमार द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मनित किया गया। इस अवसर पर ए डी ई सांस्कृतिक समिति द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



श्री पी श्रीकुमार, पखवाड़ा का उद्घाटन करते हुए।

रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एफ आर एल), मैसूर



श्री कनौजिया, हिन्दी के महत्त्व पर व्याख्यान देते हुए।

हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एफ आर एल), मैसूर द्वारा 14-29 सितम्बर 2014 के दौरान हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ हिन्दी/हिन्दी पखवाड़ा भव्य तरीके से मनाया गया। डॉ एच वी बत्रा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, डी एफ आर एल ने पखवाड़े का उद्घाटन किया और देश में सामंजस्य लाने के लिए राजभाषा के महत्त्व पर बल दिया। भविष्य निधि संगठन, मैसूर के क्षेत्रीय आयुक्त, श्री नवीन कुमार कनौजिया स्मरणोत्सव समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने भारत की अधिकारिक भाषा के महत्त्व पर प्रकाश डाला और वैज्ञानिक क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग करने को विशेषकर युवा छात्रों को प्रेरित करने के लिए डी एफ आर एल के कर्मचारियों से अपेक्षा की। उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिता विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये।

रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद



श्री एस पी दास, विजेताओं को प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए।

रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद द्वारा 03-16 सितम्बर 2014 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। कर्मचारियों के लिए नारा लेखन, अंताक्षरी जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। विभिन्न श्रेणियों और प्रभागों से संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ इनमें भाग लिया। श्री एस पी दास, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, डी एल आर एल के द्वारा सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गये।

एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर



आई टी आर में हिन्दी पखवाड़ा समारोह का दृश्य।

एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर द्वारा 01-14 सितम्बर 2014 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। श्री एम वी भास्करचारी, सह निदेशक ने पखवाड़े का उद्घाटन किया। माननीय गृह मंत्री, रक्षा मंत्री और रक्षामंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार द्वारा इस अवसर पर संदेश पढ़े गये। 10-12 सितम्बर 2014 के दौरान श्री सी आर ओझा, वैज्ञानिक एफ और श्री सुभाशीष, वैज्ञानिक एफ द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों को गति देने के लिए कम्प्यूटर और इसके महत्त्व के माध्यम से राजभाषा के कार्यान्वयन पर कार्यशालाएं आयोजित की गयीं। साल भर हिन्दी में काम करने के लिए अपर निदेशक, श्री बी के दास ने कर्मचारियों का आवाह किया। श्री एम वी के वी प्रसाद, उत्कृष्ट वैज्ञानिक और निदेशक, आई टी आर, चांदीपुर ने सरकारी कामकाज को हिन्दी में करने की अपील की।

कचरे को उपयोगी उत्पादों में परिवर्तित करें: डी आर डी ओ प्रमुख



ए एस एल परिसर, हैदराबाद में रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार स्वच्छ भारत अभियान का नेतृत्व करते हुए।

काश, हम देश में लाखों टन कचरे को सस्ते तकनीकी साधनों से उपयोगी भौतिक उत्पादों में परिवर्तित कर पाते तो विकास की बहुत गुंजाइश है। रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार ने कहा, “अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में नवचारों को लाने के लिए प्रौद्योगिकियों में तीव्र प्रगति पर्याप्त अवसर प्रदान करती है”।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के मिसाइल परिसर में उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल) में स्वच्छ भारत अभियान शुभारंभ के अवसर पर आयोजित एक सरल परन्तु जीवंत और उत्साहित सम्मेलन में वह बोल रहे थे। स्वच्छता के महत्त्व की व्याख्या करते हुए रक्षामंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार ने कहा, “हर व्यक्ति स्वच्छ, स्वस्थ वातावरण और पारिस्थितिकी तंत्र की दिशा में योगदान करने के लिए नैतिक रूप से बाध्य है। मुझे यकीन है कि सफाई की दिशा में स्वच्छ भारत अभियान की पहल राष्ट्र के दृष्टिकोण को बदल देगी।” बाद में, उन्होंने परिसर के आस-पास के क्षेत्रों में सफाई अभियान का नेतृत्व किया।

डॉ वी जी शेखरन, विशिष्ट वैज्ञानिक, महानिदेशक, मिसाइल और सामरिक प्रणाली, डी आर डी ओ; तथा डॉ टेसी थॉमस, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल) ने सफाई के महत्त्व पर बल दिया।

पूरे भारत में डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं ने भी प्रधानमंत्री की पहल में भाग लिया। इस अवसर पर रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय और भारत भर में इसकी विभिन्न प्रयोगशालाओं और प्रतिष्ठानों में स्वच्छ भारत के लिए एक शपथ दिलायी गयी।

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे

25 सितम्बर से 02 अक्टूबर 2014 के दौरान आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे में स्वच्छ भारत अभियान को बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। पूरा सप्ताह कार्यस्थलों और पूरे परिसर को

सवारने में समर्पित किया गया। डॉ के एम राजन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, ए आर डी ई ने 2 अक्टूबर 2014 को अपने संबोधन में कहा कि प्रत्येक व्यक्ति सफाई के महत्त्व के बारे में अवगत होना चाहिए और इसे एक सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में व्यवहार में लाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सही मायने में स्वच्छ भारत की इस पहल को गांधी जी के सपने को साकार करने के लिए निरंतर रूप में बढ़ाया जाना चाहिए।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बेंगलूरु

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बेंगलूरु ने 25 सितम्बर 2014 से शुरू स्वच्छ भारत सप्ताह मनाया। 2 अक्टूबर 2014 को गांधीजी की 145वीं जयंती पर कर्मचारियों को स्वच्छता शपथ दिलायी गयी। डॉ सी पी रामनारायणन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, जी टी आर ई ने कहा कि हर व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को साकार करने के लिए एक साफ परिवेश रखने की जिम्मेदारी लेनी होगी।



जी टी आर ई में स्वच्छ भारत अभियान की शपथ लेते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद

02 अक्टूबर 2014 को अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद ने स्वच्छ भारत अभियान मनाया। श्री के रामा शर्मा, वैज्ञानिक जी ने कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलायी। डॉ जी सतीश रेड्डी, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, आर सी आई ने स्वच्छता महत्त्व की व्याख्या की। अनुसंधान केन्द्र इमारत परिवार के सभी सदस्यों ने सक्रिय रूप से कार्यालय परिसर और प्रयोगशाला क्वार्टर्स में सफाई अभियान में भाग लिया।



आर सी आई में स्वच्छ भारत अभियान का दृश्य।

कार्मिक समाचार

प्रोन्नतियां

विशिष्ट वैज्ञानिक

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद



डॉ जी सतीश रेड्डी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद, को विशिष्ट वैज्ञानिक प्रोन्नत किया गया है। डॉ रेड्डी ने जवाहर लाल नेहरू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,

हैदराबाद से इलैक्ट्रॉनिक्स तथा संचार अभियांत्रिकी में प्रौद्योगिकी स्नातक, ई सी ई में पी एच डी की डिग्री प्राप्त की। आप डी आर डी ओ में 1986 में वैज्ञानिक बी के रूप में सम्मिलित हुए।

डॉ रेड्डी ने उन्नत नेवीगेशन और उपग्रह प्रणाली की दशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और परियोजना लीडर, प्रौद्योगिकी निदेशक और एसोसिएट निदेशक सहित कई पदों पर कार्य किया है। आर सी आई के निदेशक के रूप में वह डिजाइन, विकास, जड़त्वीय प्रणाली के महत्वपूर्ण क्षेत्रों विमान प्रौद्योगिकियों के निर्माण, एम्बेडेड कम्प्यूटर, नियंत्रण, वास्तविक समय साफ्टवेयर और सिमुलेशन, बिजली आपूर्ति, खोजकर्ताओं, मिसाइल कार्यक्रमों के लिए उड़ान उपकरणों और देश में अन्य रक्षा अनुप्रयोगों में लगे रहे।

पत्रिकाओं, राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उनके कई लेख प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने अध्यक्ष और आयोजन समिति के सह-अध्यक्ष के रूप में अनुसंधान संस्थानों, शिक्षा और उद्योगों के बीच तालमेल को मजबूत करने के लिए कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का संचालन किया है।

डॉ रेड्डी रॉयल एयरोनॉटिकल सोसायटी, लंदन के फेलो हैं और रॉयल नेवीगेशन संस्थान, लंदन और अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ एयरोनॉटिक्स एंड एस्ट्रोनॉटिक्स के एसोसिएट फेलो हैं। नेवीगेशन और गतिनियंत्रण अकादमी, रूस ने उन्हें पूर्ण सदस्य डिप्लोमा से नवाजा है

और अकादमी के एक विदेशी सदस्य के रूप में भी शामिल कर लिया है। वह भारतीय राष्ट्रीय अभियांत्रिकी अकादमी, भारतीय वैमानिकी सोसायटी और कई अन्य वैज्ञानिक/इंजीनियरिंग संस्थानों के फेलो भी हैं। वह प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के शासी परिषदों का हिस्सा भी हैं।

डॉ रेड्डी भारतीय विज्ञान कांग्रेस होमी जे भाभा मेमोरियल पुरस्कार, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के वर्ष वैज्ञानिक पुरस्कार, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन युवा वैज्ञानिक पुरस्कार और आत्मनिर्भरता में उत्कृष्टता के लिए अग्नि पुरस्कार के प्राप्तकर्ता हैं। उनको कई अन्य प्रमुख पुरस्कार प्राप्त हुये हैं जिनमें एफ ए पी सी सी आई उत्कृष्टता इंजीनियरिंग पुरस्कार, एस एस आई विक्रम पुरस्कार, ए ई एस आई डॉ बीरेन रॉय अंतरिक्ष विज्ञान और डिजाइन पुरस्कार, आई ई टी ई बी वी बालिगा मेमोरियल पुरस्कार और रॉकेट एवं संबंधित तकनीकी पुरस्कार शामिल हैं।

उत्कृष्ट वैज्ञानिक

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम



नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम के निदेशक, श्री सी दुर्गा मालेश्वर ने 26 सितम्बर 2014 को उत्कृष्ट वैज्ञानिक के रूप में कार्यभार ग्रहण कर लिया है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास के पूर्व छात्र श्री मालेश्वर ने आंध्र विश्व विश्वविद्यालय से रडार इंजीनियरिंग में एम टेक किया है और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास से इलैक्ट्रॉनिक्स और संचार में एम एस की डिग्री प्राप्त की है। उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से रक्षा और सामरिक अध्ययन में एम फिल की उपाधि प्राप्त की है। श्री मालेश्वर राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय, नई दिल्ली के 45वें कोर्स के स्नातक भी हैं।

वह एसोसिएट वैमानिकी प्रणाली के साथ हथियार नियंत्रण प्रणाली, एम्बेडेड कम्प्यूटर, रियल टाइम ऑपरेटिंग

प्रणाली, हथियार लांच मार्गदर्शन और नियंत्रण प्रौद्योगिकियों के महत्वपूर्ण क्षेत्रों के अनुसंधान में जुट गये। इन पद्धतियों में से ज्यादातर अपनी तरह की पहली पद्धति है और सेवा में शामिल किया गया है, जैसे –टारपीडोज के लिए सबसे पहले ठोस हथियार डाटा रिकार्डर, पनडुब्बियों के लिए पहली स्वदेशी सामरिक हथियार सामरिक प्रणाली पनचेन्द्रिया, हेलीकॉप्टर अग्नि नियंत्रण प्रणाली, एकीकृत पनडुब्बी रोधी युद्ध जटिल आईएसी मोड '0' और नौसेना फ्रिगेट के लिए मोड 'सी' और ए एस डब्ल्यू वाहक और टारपीडो-रोधी झांसा प्रक्षेपण नियंत्रण प्रणाली आदि। इनके अलावा उन्होंने तार निर्देशित टारपीडो परियोजना के सफल समापन के लिए एक अधिकारी के रूप में, प्रणाली एकीकरण और कई टारपीडो प्रेरण समर्थित उत्पादों:

एयर/पोत जनित प्री-सेटर्स, टारपीडो सिमुलेटर्स और ड्रिल एवं अभ्यास टारपीडो इत्यादि के लिए योगदान दिया है। इन सभी प्रणालियों को सेवा में शामिल किया गया है।

श्री मालेश्वर माननीय भारत के प्रधानमंत्री से वर्ष 2007 के लिए वैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्तकर्ता रहे हैं और 2004 के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन समूह प्रौद्योगिकी पुरस्कार प्राप्तकर्ता रहे हैं। वह आई ई ई ई के सदस्य हैं और इंस्टीट्यूशन ऑफ दूरसंचार और इंजीनियर्स (आई ई टी ई) के आजीवन सदस्य हैं। वर्तमान में वह इंस्टीट्यूशन ऑफ दूरसंचार और इंजीनियर्स (आई ई टी ई), विशाखापटनम चैप्टर के अध्यक्ष हैं।

पुरस्कार

सर्वोत्तम आलेख पुरस्कार

जवाहर लाल नेहरू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हैदराबाद में 25-27 सितम्बर, 2014 के दौरान भारत में डिजिटल पुस्तकालयों की स्थिरता पर आयोजित पहले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ राजीव विज, वैज्ञानिक एफ, नाभिकीय औषधि तथा संबंध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली को उनके 'पुस्तकालय पेशे से अनुभव : नेतृत्व, रचनात्मकता एव नवीनता' सर्वोत्तम लिखित एवं प्रस्तुति पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रोफेसर टी पापी रेडडी, अध्यक्ष, तेलंगाना राजकीय उच्चतर शिक्षा परिषद, तेलंगाना सरकार द्वारा सम्मानित किया गया।



डॉ राजीव विज, प्रोफेसर रेडडी (दांये से दूसरे) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

वार्षिक अभियंता पुरस्कार

श्री के रामा राव, वैज्ञानिक सी, अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद को इंजीनियरिंग क्षेत्र में उनके योगदान के लिए वार्षिक अभियंता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार 15 सितम्बर 2014 को आंध्र प्रदेश सरकार और इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), आंध्र प्रदेश राज्य केन्द्र द्वारा 47वें अभियंता दिवस समारोह के अवसर पर दिया गया था। प्रेक्षास्त्र प्रणाली मॉडलिंग और अनुकरण उनका मौजूदा कार्य क्षेत्र है।



खेलकूद गतिविधियां

डी आर डी ओ उत्तर क्षेत्र टेबल टेनिस टूर्नामेंट

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर द्वारा 20-22 अगस्त, 2014 के दौरान रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन उत्तरी मंडल टेबल टेनिस टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। रक्षा प्रयोगशाला (डी एल) के निदेशक, डॉ एस आर वडेरा ने टूर्नामेंट का उद्घाटन किया। विभिन्न प्रयोगशालाओं से 11 टीमों ने टूर्नामेंट में भाग लिया।

ठोसावस्था भौतिक प्रयोगशाला (एस एस पी एल), दिल्ली ने टीम चैंपियनशिप जीती और रक्षा सामग्री एवं भण्डार अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी एम एस आर डी ई), कानपुर टीम उपविजेता रही। क्षेत्रीय सैन्य उड़नयोग्यता केंद्र (आर सी एम ए), चंडीगढ़ के श्री एम ए खान और यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून के श्री एम एस उपाध्याय क्रमशः विजेता और उपविजेता रहे। कार्यवाहक निदेशक, डॉ एस के जैन ने विजेता टीम और खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान किये।



डॉ एस आर वडेरा, टूर्नामेंट का उद्घाटन करते हुए।

श्रेणियां

टीम चैंपियनशिप

ओपन एकल

ओपन डबल

वेटरन एकल

वेटरन डबल

महिला एकल

विजेता

एस एस पी एल, दिल्ली

श्री एम ए खान
आर सी एम ए, चंडीगढ़

आई आर डी ई, देहरादून

श्री ए के पांडे

डी एम एस आर डी ई, कानपुर

आई आर डी ई, देहरादून

कुमारी नीरज
ठोसावस्था भौतिक प्रयोगशाला, दिल्ली

उपविजेता

डी एम एस आर डी ई, कानपुर

श्री एम एस उपाध्याय
आई आर डी ई, देहरादून

डी एम एस आर डी ई, कानपुर

श्री बी एस नेगी

डी एम एस आर डी ई, कानपुर

डी एम एस आर डी ई, कानपुर

कुमारी रितु भास्कर
रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर

उच्च अर्हता प्राप्ति

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद

श्रीमति टेसी थॉमस, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद ने अपने शोध शीर्षक 'इनफ्लाइंट अनुमानों का उपयोग कर बैलेस्टिक मिसाइलों के लिए डिजाइन और एल्गोरिदम गाइडेन्स' के लिए जवाहर लाल नेहरू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हैदराबाद से इलैक्ट्रिकल और इलैक्ट्रॉनिक्स में पी एच डी की उपाधि प्राप्त की है।



रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद

श्री एम सुधाकर राव, वैज्ञानिक ई, को उनके शोध शीर्षक 'कोल्ड रोलिंग से समान कोणीय चैनल द्वारा प्रसंस्कृत वाणिज्यक विशुद्ध टाइटेनियम का यात्रिक व्यवहार' के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास द्वारा पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया गया।



डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूरु



ब्रिगेडियर ए के चानन, अनुरूपक का निरीक्षण करते हुए।

03 सितम्बर 2014 : ब्रिगेडियर ए के चानन, उपमहानिदेशक, डल्यू ई-1। उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई) के निदेशक, श्री पी श्रीकुमार ने दर्शकों को चल रही परियोजनाओं और गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। ब्रिगेडियर चानन ने भी रुस्तम 2 और अनुकरण प्रभागों का दौरा किया।

रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला (डील), देहरादून

26 अगस्त 2014: नौसेना स्टाफ के वाइस चीफ, वाइस एडमिरल सुनील लांबा। उन्हें रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स प्रयोज्यता



वाइस एडमिरल सुनील लांबा को डील की गतिविधियों के बारे में बताया जा रहा है।

प्रयोगशाला (डील) में चल रही नौसेना परियोजनाओं के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी गयी। वाइस एडमिरल लांबा ने उच्च अंत संचार प्रणाली विकसित करने के लिए रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला (डील) की सराहना की।

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल) जोधपुर

02 सितम्बर 2014 : श्री उपेन्द्र शाह, पी सी डी ए। रक्षा प्रयोगशाला (डी एल) के निदेशक, डॉ एस आर वडेरा ने तकनीकी गतिविधियों और प्रयोगशाला की उपलब्धियों के बारे में दर्शकों को जानकारी दी। बैठक के दौरान प्रयोगशाला से संबंधित वित्तीय मुद्दों पर भी चर्चा की गयी।



वाइस एडमिरल (सेवानिवृत्त) दिनेश प्रभाकर को डी एल जे की गतिविधियों के बारे में बताया जा रहा है।

3-4 सितम्बर 2014 : वाइस एडमिरल (सेवानिवृत्त) दिनेश प्रभाकर, महानिदेशक, ए टी वी पी। उन्होंने प्रयोगशाला में विभिन्न तकनीकी सुविधाओं का दौरा किया और उन्हें तकनीकी गतिविधियों की जानकारी दी गयी।

प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आई टी एम), मसूरी



डॉ तमिलमणी, आई टी एम के वैज्ञानिकों से चर्चा करते हुए।

22 अगस्त 2014 : डॉ के तमिलमणी, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (एरो) एवं श्री पी एस सुब्रमण्यम, विशिष्ट वैज्ञानिक, कार्यक्रम निदेशक (कॉम्बैट एयरक्राफ्ट)

एवं निदेशक, वैमानिकी विकास एजेंसी (ए डी ए), बेंगलूरु। उन्होंने आई टी एम की सुविधाओं का जायजा लिया एवं आई टी एम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित किया। आई टी एम के संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श के दौरान दोनों प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने एल सी ए प्रोजेक्ट के दौरान परियोजना प्रबंध संबंधी अनुभवों को बताया तथा डी आर डी ओ प्रोजेक्ट्स में सफलता को सुनिश्चित करने के लिए परियोजना प्रबंध में उत्तम अभ्यासों का प्रचार-प्रसार करने पर जोर दिया। डॉ एस बी सिंह, निदेशक, आई टी एम ने वर्ष 2013-2014 के दौरान आई टी एम की उपलब्धियों को प्रस्तुत किया था। दोनों प्रतिष्ठान व्यक्तियों से एरो समूह से अधिक से अधिक वैज्ञानिकों को आई टी एम द्वारा चलाए जाने वाले प्रशिक्षण में भाग लेने का आग्रह किया।

सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केन्द्र (एम टी आर डी सी), बेंगलूरु



डॉ सतीश कुमार, एम टी आर डी सी के वैज्ञानिकों से चर्चा करते हुए।

03 सितम्बर 2014 : डॉ सतीश कुमार, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (टी एम)।

मुख्य सम्पादक	सह मुख्य सम्पादक	सम्पादक	सहायक सम्पादक	सम्पादकीय सहायक	मुद्रण	विपणन
सुरेश कुमार जिंदल	बी नित्यानंद	फूलदीप कुमार	अशोक कुमार	संजय कटारे शालिनी छाबड़ा	एस के गुप्ता हंस कुमार	आर पी सिंह